प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 07 * NOV 2006 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	01 Sep 06	55				ब्रह्म एवं माया का स्वरूप-स्वभाव, कर्म के फल :-१-आप्य २-उत्पाद्य ३-संस्कार्य ४-विकार्य ५-गुणधान, रंग चढ़ाना	
2	02 Sep 06	46				ब्रह्म-माया, ईश्वर-जीव आदि ६ सम्बंधों का एवं सामान्य-विशेष ज्ञान का निरूपण रज्जु सर्प का दृष्टान्त	Imp
3	02 Nov 06 [P]	37				**ईशावास्य उपनिषद** : यजुर्वेद - **भाग २**	2
4	03 May 07	51				कर्म प्रकृति में हैं आत्मा अकर्म है, अकर्म में कर्म व कर्म में अकर्म देखने वाला योगी है सामान्य एवं विशेष कर्म	
5	03 Sep 06	48				चिदाभास का स्वरूप निरूपण चिदाभास-कृष्ण, बुद्धि-राधा एवं सखियाँ इन्द्रियाँ हैं,चिदाभास कर्ता-भोक्ता बनता है	Imp
6	03 Nov 06	48				कार्पण्य दोष - कृपणता यानि अज्ञान, सामान्य एवं विशेष ज्ञान ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या	
7	04 May 07 [P]	27				भगवान की सब पर समान असीम कृपा और गुण-कर्मानुसार वर्ण विभाग	
8	04 Sep 06	44	कक्षासामग्री			विश्वविराट दर्शन, पुरुष-ब्रह्म द्रष्टा-दर्पण रूप व माया दृश्य है, कृष्ण-मैं सत् हूँ मेरी वश्वविराट देह असत् है	Imp
9	04 Nov 06	47				माया की अद्भुत शक्ति का वर्णन, स्कंधपुराण : मल्लाह कन्या का दृष्टान्त, माया के कार्य जागृत-स्वप्न की विवेचना	
10	04 Nov 06[P]	39				**ईशावास्य उपनिषद** : यजुर्वेद - **भाग ३**	
11	05 May 07	54				ओंकार ब्रह्म का नाम है, ओंकार प्रणव/प्रकृति/माया है, ब्रह्म जागृत-स्वप्न-प्रणव को जानने वाला है	Imp
12	05 Nov 06	49				गीता २/२६ : ब्रह्म ज्ञान का श्रोता वक्ता और ज्ञाता होना सभी आश्चर्य है	Imp
13	06 Nov 06	48				देह-देही विवेक से ही सर्व दुःख निवृत्ति संभव है,त्रिगुण निर्मित तीनों देह मायारूप हैं,देही सर्वथा पृथक व असंग है	Imp
14	06 Nov 06[P]	35				**ईशावास्य उपनिषद** : यजुर्वेद - **भाग ४**	
15	07 May 07	43				ओंकार को माया व ओंकार के प्रकाशक को ब्रह्म जानो,अभेद-बुद्धि/अद्वैत ही ज्ञान एवं भेद-बुद्धि:द्वैत ही अज्ञान है	Imp
16	07 Nov 06	43				गीता २/३० : आत्मा विभु व्यापक साक्षी अकर्म असंग एवं सत्-चित्-आनंद से पूर्ण है, सब कर्म प्रकृति में हैं	
17	07 Nov 06[P]	33				**ईशावास्य उपनिषद** : यजुर्वेद - **भाग ५**	
18	08 May 07	48				त्रिकांडमय वेद मल विक्षेप आवरण रूपी अज्ञान का नाशक है, विद्ज्ञाने विद्सत्तायाम विद्विचारणे वांगमयवेद निरू०	Imp
19	08 Nov 06	41				गीता २/३० : आत्मा जगत का अधिष्ठान है,स्व०जा०जगत अज्ञान-निद्रा-माया का कार्य है,सारा जगत भ्रम मात्र है	Imp
20	08 Nov 06[P]	32				**ईशावास्य उपनिषद** : यजुर्वेद - **भाग ६**	
21	09 May 07	39				क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ दो ही पदार्थ हैं, आत्मा के अज्ञान से ही जगत भासता है, अपने स्वरूप का अज्ञान ही कारण शरीर है	
22	09 Nov 06[P]	32				**ईशावास्य उपनिषद** : यजुर्वेद - **भाग ७**	
23	14 May 07	49				स्कंधोपनिषद-भ०शंकर का षडानन को उपदेश, सब शरीर देवालय व उनमें एक ही देव है,जीव का स्वरूप सच्चि०है	
24	14 May 07[P]	27				अध्यात्म रामायण - सीताजी द्वारा हनुमानजी को भगवान राम का निर्गुण निराकार स्वरूप निरूपण	
25	16 Apr 07	41				गीता २/११, १२ : आत्म-अनात्म विवके ही मोह नाशक है, अज्ञान के कार्य अहंता-ममता ही मोह कहलाता है	
26	17 Apr 07	36				गीता २/११, १२, एवं १३ मुख्य विवेचना	
27	18 Apr 07	41				गीता २/११, १२, १३-२७ एवं १७ मुख्य विवेचना, आत्मा की प्रियता - धन, पुत्र, पिण्ड, प्राण व आत्मा	
28	19 Apr 07	49				गीता २/३० : आत्मा-अनात्मा / चेतन-अचेतन भेद निरूपण	***
29	19 Apr 07[P]	33				मोह का कारण अज्ञान-निद्रा है जिससे भ्रमरूपी स्वप्न-जागृत जगत उत्पन्न होता है, अर्जुन का ज्ञान का अधिकारत्व	Imp
30	20 Apr 07[P]	31	पूर्ण कक्षा सामग्री			गीता २/१३ : देह-देही भेद, स्थू०सू०का०तीन देह निरू०, सब कर्म सूक्ष्म देह में हैं आत्मा अकर्म हैं, अज्ञानवश चिदाभास अथवा साभास बुद्धि ही कर्ता-भोक्ता का अभिमान करता है, चिदाभास को ही बन्ध-मोक्ष है एवं स्वरूप ज्ञान से जीव मुक्त हो जाता है, चिदाभास की ७ अवस्थाऐं ।	Imp
31	21 Apr 07[P]	30				आत्मा-अनात्मा विवेक, अवस्थात्रेय परीक्षण एवं सच्चिदानंद का स्वरूप निरूपण	Imp